BA Part 2 Philosophy Hons paper 3rd 2019-20

Dr. Arti Kumari
Asso. Prof.
Deptt. Of Philosophy
B.N. College
T. M.B.U, Bhagalpur

नीति दर्शन में उपयोगितावाद एक ऐसा सिद्धान्त है जो नैतिकता का मापदंड या आदर्श उपयोगिता को मानता है। इसके अनुसार किसी कार्य का औचित्य उसकी उपयोगिता पर निर्भर करता है। ~~जिस कार्य~~ वही कार्य उचित है जो मानव के लिए उपयोगी है तथा वह कार्य मनुष्य के लिए अनुचित है जो उसके लिए अनुपयोगी है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने उपयोगितावाद का सार बताते हुए कहा है कि -

"दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा अपने साथ चाहते हो तथा अपने पड़ोसी से भी उसी प्रकार प्रेम करो जिस प्रकार स्वयं से करते हो।"

मिल के उपर्युक्त विचार से स्पष्ट है कि किसी कार्य का औचित्य उसकी उपयोगिता में निहित है। यहाँ पर प्रश्न उठता है कि मानव के लिए कौन सा कार्य उपयोगी होगा? इसके उत्तर में उपयोगितावाद के समर्थकों का मानना है कि मानवमात्र के लिए उपयोगी सिर्फ सुख ही है और अनुपयोगी दुःख है। इससे स्पष्ट है कि मानव उसी वस्तु को प्राप्त करना चाहता है जिससे उसे सुख मिलता है तथा उस वस्तु से भागता है जिससे उसे दुःख की प्राप्ति होती है। इस तरह सुख ही मानव के लिए उपयोगी है तथा सुख को ही नैतिकता का मापदंड कहा जाएगा।

उपयोगितावाद के उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि

स्वार्थमूलक सुखवाद ... और

जिसमें व्यक्ति अपने निजी सुख स्वार्थ और
व्यक्तिगत सुख के लिए प्रयास करता है। इस कारण
स्वार्थमूलक सुखवाद को निकृष्ट सुखवाद भी कहा जाता
परार्थमूलक सुखवाद के अनुसार भी
सुख ही साध्य है परन्तु यह व्यक्ति के निजी स्वार्थ प.
आधारित न होकर समाज के प्रत्येक व्यक्ति के सुख के
लिए प्रयास करता है क्योंकि उसी में इसका सुख छिपा है।
दार्शनिकों का मानना है कि व्यक्तिगत सुख के लिए
किया गया कार्य पशु के समान है जबकि मनुष्य एक
सामाजिक प्राणी है और। इसका हित समाज में ही
निहित है। इस कारण परार्थमूलक सुखवाद का
लक्ष्य अधिक-से-अधिक ही नहीं अपितु सबको
सुखी बनाना मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए। परन्तु
सबको सुखी बनाना संभव नहीं है अतः जीवन का
आदर्श होना चाहिए अधिकतम व्यक्तियों का
अधिकतम सुख (greatest happiness
of the greatest number)। ऐसा तभी संभव
है जब व्यक्ति स्वयं को सिर्फ अपने के लिए
न समझ कर सबको के लिए each one for

(Universalism) भी कहते है। ~~परार्थवाद~~
उपयोगितावाद को परार्थवाद (altruism) भी कहा गया है जिसमें maximum happiness सार्वभौम सुख universal happiness, सामान्य सुख (general happiness) एवं सामाजिक सुख (social happiness) उपयोगितावाद के सिद्धान्त है जिसमें समष्टि के कल्याण को ही व्यक्ति का कर्तव्य माना गया है।

उपयोगितावाद के समर्थकों में जेरेमी बेंथम, जॉन स्टुअर्ट मिल, सिजविक आदि दार्शनिक प्रमुख हैं। इसमें बेंथम को निकृष्ट उपयोगितावाद का समर्थक माना गया है क्योंकि बेंथम ~~यह तो स्वीकार करते है कि~~ greatest happiness of the greatest number को स्वीकार करते है क्योंकि बेंथम गुण की अपेक्षा परिमाण को को ही उपयोगितावाद का लक्ष्य स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार सुख भौतिक हो या आध्यात्मिक दोनों एक प्रकार का है जिससे परिमाण में अधिक सुख मिले वही सुख वांछनीय है। बेंथम ने परिमाण के माप के लिए seven factors को आवश्यक माना है —

तिव्रता (intensity)

निकटता (proximity)
असंदिग्धता (certainty)

बेंथम के इस सात तत्वों को seven dimensions के नाम से जाना जाता है जिसे उन्होंने सुखवादी गणना (hedonistic calculus) अथवा नैतिक गणित (moral arithmatic) कहा है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर बेंथम को निकृष्ट उपयोगितावाद का समर्थक माना जाता है जबकि इसके विपरीत जॉन स्टुअर्ट मिल सुखवादी और उपयोगितावादी दार्शनिक थे। सुखवादी दार्शनिक होने के बावजूद वे बेंथम से भिन्न हैं। उन्होंने बेंथम के सिद्धान्त को परिष्कृत कर उपयोगितावाद का एक नवीन आयाम प्रस्तुत किया है जिसके कारण मिल के दर्शन को उत्कृष्ट परार्थवाद सुखवाद (Refined altruistic or universal hedonism) कहा गया है। मिल भी कि बेंथम के समान सुखवाद को मानव को स्वीकार करते हैं। इस कारण मिल भी नैतिक सुखवाद के समर्थक हैं। उनके अनुसार —

"Happiness is the ~~soul~~ sole end of human actions."

उत्पन्न करता है। इससे स्पष्ट है कि मिल के दृष्टिकोण में किसी वस्तु का भाव या गुण का अपने आप में कोई महत्व नहीं है बल्कि वह वस्तु कितना सुख उत्पन्न करेगी, उसी में उसका महत्व है।

मिल का उपयोगितावाद मनोवैज्ञानिक सुखवाद पर भी आधारित है। यद्यपि वे नैतिक सुखवाद के समर्थक हैं परन्तु फिर भी मूलतः मनोवैज्ञानिक हैं। उनके अनुसार मनुष्य स्वभावतः सुख की इच्छा करता है। वह सर्वदा सुख प्राप्ति के लिए कोई कार्य करता है। इस तरह मिल मनोवैज्ञानिक सुखवाद की तरह यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वस्तु की प्राप्ति करने की इच्छा तथा उसे सुखद पाना एक ही बात है। इसी प्रकार किसी वस्तु को वांछनीय समझना और उसे सुखद समझना दोनों एक ही है। मिल कहते हैं कि सुखद वस्तु के अतिरिक्त किसी वस्तु की इच्छा करना मानव के लिए सर्वथा असंभव है। मिल ने इसे तर्क द्वारा सिद्ध करते हुए कहा है कि —

प्रत्येक व्यक्ति जहाँ तक अपने सुख को ... है वहाँ तक उसकी इच्छा करता है।

वरन् सामान्य स्वार्थ भाव ...

मिल के इस निष्कर्ष पर दार्शनिकों का मानना है कि जब ~~मनुष्य~~ यदि स्वभावतः मनुष्य स्वार्थी है तो उसमें परार्थ की भावना कहाँ से उत्पन्न होगी? मिल इसका जवाब मनोवैज्ञानिक आधार पर देते हैं। उनके अनुसार मानव के स्वभाव के अनुसार ही सुख स्वतः साध्य है। निजी सुख की प्रेरणा से ही व्यक्ति कर्म करने को प्रवृत्त होता है। मनुष्य का यह स्वभाव प्रारंभिक है। बाद में व्यक्ति के स्वभाव में परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन का कारण है- सहानुभूतिमूलक सुखवाद (Sympathetic hedonism)। मनुष्य स्वार्थ से परार्थ की ओर इसी सहानुभूति के कारण अग्रसर होता है। प्रारंभ में व्यक्ति स्वार्थी होने के कारण व्यक्तिगत सुख को ही साध्य मानता है। परन्तु वह दूसरों के साथ sympathy भी रखता है जिस कारण वह दूसरों के दुःख को दूर करने का प्रयास करता है ~~जिससे~~ बाद में परार्थ ही साध्य बन जाता है जिसे मनोवैज्ञानिक तथ्य रुचि का स्थानान्तरण (Tranfarence of interest सिद्ध करता है जिसका आधार सहानुभूतिमूलक सुखवाद ही है।

(1) भौतिक
(2) राजनैतिक
(3) सामाजिक
(4) धार्मिक

भौतिक अंकुश प्राकृतिक अंकुश है जिससे स्वास्थ्य नष्ट होता है।

राजनीतिक अंकुश राजकीय दंड का भय है।

सामाजिक अंकुश समाज का डर है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका हित समाज में निहित होने के कारण उसपर समाज का दबाव हमेशा बना रहता है।

धार्मिक अंकुश के अनुसार मनुष्य को नरक का भय रहता है।

मिल का मानना है कि मनुष्य इन्हीं ~~नैतिक~~ अंकुश के कारण परोपकार करता है परन्तु ये दबाव बाह्य दबाव हैं जिन्हें नैतिक नहीं कहा जा सकता। इस कारण मिल इन बाह्य दबावों के अतिरिक्त आंतरिक दबाव (internal sanctions) को स्वीकार करते हैं। यह मनुष्य की सामाजिक भावना पर आधारित है। मनुष्य अपने समान ही दूसरे व्यक्तियों को भी समाज का अंग मानते हैं जिसके कारण इनके सुख-दुःख से प्रभावित होता है। इसे मिल ने स्पष्ट करते

अनुभूति (feeling of pain attended in the violation of duty) होती है। मिल स्वार्थ से परार्थ की ओर मनुष्य का झुकाव सामाजिक भावना और सहानुभूति पर आधृत मानते हैं। बेंथम के समान ही मिल उपयोगितावादी दार्शनिक हैं परन्तु मिल भौतिक और इन्द्रिय सुख की अपेक्षा मानसिक और बौद्धिक सुख को श्रेष्ठ मानते हैं जबकि बेंथम के अनुसार —

"quantity of pleasure being equal, pushpin is as good as poetry."

इसके विपरीत मिल ~~का मानना है कि वे अपनी~~ पुस्तक Utilitarianism में व्यक्त किया है —

"It is better to be human being dissatisfied than a pig satisfied, better to be Socrates dissatisfied than a fool satisfied."

इस तरह मिल ने ~~परिमाण~~ परिमाण के स्थान पर गुण को महत्ता प्रदान की है जिस कारण मिल का परिष्कृत उपयोगितावाद Epicurism के उत्कृष्ट

अनुभवी व्यक्ति द्वारा हो सकता है क्योंकि अनुभवी व्यक्ति
अपने अनुभव के आधार पर सुख की श्रेष्ठता को सिद्ध
कर सकते हैं। दर्शन, साहित्य, संगीत आदि से प्राप्त ज्ञान
शारीरिक सुख से श्रेष्ठ है जिसे अपने अनुभव के आधार
पर योग्य न्यायाधीश निश्चित रूप से स्पष्ट कर सकते
हैं। इसके पीछे उनके अंदर गौरव की भावना (Sense
of dignity) होती है। इस आधार पर ही गौरव की भावना ही
इन्द्रियजनित ~~निम्न~~ सुख की अपेक्षा बौद्धिक सुख को श्रेष्ठ बताती है।

उपयोगितावाद की आलोचना ① मिल का उपयोगितावाद
मनोवैज्ञानिक सुखवाद पर आधारित होने के कारण ~~अपने~~
व्यक्तिगत सुख को ही जीवन का लक्ष्य मानता है।
अतः वह अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख के
लिए कार्य नहीं कर सकता।

② मिल का उपयोगितावाद नैतिक सुखवाद का समर्थन
करने के कारण दोषपूर्ण है। उन्होंने मनोवैज्ञानिक
आधार पर नैतिक सुखवाद का समर्थन किया है जिसमें
पहला तथ्यात्मक है और दूसरा मूल्यात्मक। तथ्य
के आधार पर मूल्य को सिद्ध नहीं किया जा सकता।
मिल के तर्क में आलंकारिक भाषा का दोष (fallacy of

आंतरिक दबाव के रूप में परोपकार को मानते हैं जिसका आधार सहानुभूति की भावना है। परन्तु मिल के सहानुभूति की स्पष्ट व्याख्या करने में सक्षम नहीं है। मिल के अनुसार सुख के लिए परोपकार करने से अपना सुख परोपकार बन जाता है। इसके आक्षेप में आलोचकों का मानना है कि इस प्रकार के सुख से परार्थवादी भावना उत्पन्न नहीं हो सकती।

उपर्युक्त आलोचना के बावजूद मिल के उपयोगितावाद का महत्व कम नहीं होता, क्योंकि मिल ही ऐसे दार्शनिक हैं, जिन्होंने सुख की व्याख्या उपयोगिता के आधार पर की है जो इनका materialistic approach है। वे अपने व्यक्तिगत सुख से समाज के सुख की ओर अग्रसर होते हैं जिससे उनका यह प्रयास